(ग) तीसरी पंचवर्षीय योजना में इस पर कितनी धनराशि रखी गई है तथा अब तक कितनी खर्च हो चुकी है ?

सिंचाई और विद्युत् मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अलगेशन) :(क) मार्च, १९६१ के अन्त तक ४,१४८ ग्रामों में बिजली लगाई गई थी । अप्रैल, १९६१ से २२३ और ग्रामों में बिजली लगाने की स्वीकृति मिल गई है ।

(ख) ५,६४८ ।

(ग) तृतीय पंचवर्षीय योजना के दौरान राज्य में ग्राम विद्युतन के लिये ९०० लाख रुपये का प्रबन्ध किया गया है । ऐसी सूचना मिली है कि तृतीय योजना के प्रथम वर्ष में ५७.४७ लाख रुपये व्यय हुए हैं ।

हाल्ट स्टेशनों पर यात्री सुविधायें

१११४. **श्री कृष्ण देव त्रिपाठी** : क्या रेलवे मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) हाल्ट स्टेशनों पर यात्रियों के धूप और वर्षा से बचने के लिये क्या सुविधा प्रदान की गई है ;

(ख) यदि ऐसी कोई सुविधा नहीं है, तो क्या रेल विभाग शीघ्र यात्रियों को धूप और वर्षा से बचने के लिये उचित सुविधायें देने की व्यवस्था करेगा ?

रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाह-नवाज खां) : (क) रेलवे की यह नीति है कि हाल्ट स्टेशनों पर यात्रियों के लिए एक छोटा सा प्रतीक्षा शेड बनाया जाय जिससे टिकट घर का काम भी लिया जाय । यह व्यवस्था सभी हाल्ट स्टेशनों पर की जा रही है ।

(ख) सवाल नहीं उठता ।

कानपुर-लखनऊ बड़ी लाइन को दोहरा करना

१११५. **श्री कृष्ण देव त्रिपाठी** : क्या रेलवे मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) लखनऊ कानपुर के बीच बड़ी लाइन दोहरी करने का काम कब तक पूरा हो जायेगा ; और

(ख) क्या कानपुर के निकट गंगा नदी पर भी दोहरी लाइन डालने के लिये सरकार एक पुल और बनाने पर विचार कर रही है ?

रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाह नवाज खां) : (क) कानपुर और लखनऊ के बीच ४४.५ मील लम्बे सेक्शन में से कानपुर और उन्नाव के बीच ९.९० मील लम्बे टुकड़े पर (जिसमें गंगा का पुल शामिल नहीं है) दोहरी लाइन बिछायी हुई है । इस सेक्शन के बाकी इकहरी लाइन के टुकड़े पर दोहरी लाइन बिछाने का विचार नहीं है ।

(ख) कानपुर के पास गंगा पर एक और पुल बनाने का अभी कोई प्रस्ताव नहीं है ।

उत्तर प्रदेश में मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम

१११६. **श्री कृष्ण देव त्रिपाठी** : क्या स्वास्थ्य मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) मलेरिया उन्मूलन योजना को उत्तर प्रदेश में कितनी सफलता मिली है ;

(ख) पिछले पांच वर्ष में प्रतिवर्ष कितने व्यक्ति उत्तर प्रदेश में मलेरियाग्रस्त हुए तथा कितनी मौतें हुईं ;

(ग) यह योजना उत्तर प्रदेश में कितने वर्ष और चलेगी ; और

(घ) योजना समाप्त होने पर क्या मलेरिया का पूर्ण उन्मूलन हो जायेगा ?

स्वास्थ्य मन्त्री (डा० सुशीला नायर) : (क) उत्तर प्रदेश राज्य में राष्ट्रीय मलेरिया नियन्त्रण कार्यक्रम १९५३–५४ में प्रारम्भ किया गया था । ५ वर्ष की एक संक्रियावस्था के पश्चात् यह देखा गया कि मलेरिया की व्यापकता काफी घट गई है, जैसा कि निम्नां-

कित मलेरियोमीट्रिक सूचक से स्पष्ट होगा ।

वर्ष	बाल प्लीहा वहण दर	बाल परजीवी दर	शिशु परजीवी दर
१९५३–५४.	१३.६	५.४	०.४
१९५७–५८.	७.४	०.६	०.३

१९५३–५४ में उपलब्ध आंकड़ों की तुलना में बाल प्लीहा, परजीवी और शिशु परजीवी दरों में क्रमशः ४५.६, ८८.९ और और २५ प्रतिशत तक कमी हुई है । अनुपाती रोगी दर (अस्पतालों और औषधालयों में इलाज किये गये सभी प्रकार के रोगों के रोगियों से क्लिनिकी मलेरिया रोगियों का प्रतिशत) जो १९५३–५४ में १४.९ प्रतिशत थी, १९५७–५८ में वह ७.१ प्रतिशत ज्ञात हुई, अर्थात् इसमें लगभग ५२.३ प्रतिशत कमी हुई । मलेरिया नियन्त्रण कार्यक्रम १९५८–५९ में उन्मूलन कार्यक्रम में बदल दिया गया । उन्मूलन कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में ४० एकक (प्रत्येक दस लाख आबादी की) स्थापित की गई । १९५९–६० से २७ दूसरी मलेरिया उन्मूलन एककों ने काम करना प्रारम्भ कर दिया जिससे सारे राज्य में कुल ६७ एकके हो गईं । मलेरिया की घटनायें और भी काफी कम हो गई हैं । १९६१–६२ के अन्त में अनुपाती रोगी दर ०.१ प्रतिशत थी जबकि यही दर १९५७–५८ में ७.१ प्रतिशत तथा १९५३–५४ में १४.९ प्रतिशत थी । इस प्रकार १९५३–५४ में उपलब्ध आंकड़ों की तुलना में १९६१–६२ में कुल ९४ प्रतिशत कमी हुई । इसके अतिरिक्त बाल प्लीहा, बाल परजीवी और शिशु परजीवी सूचक में काफी कमी हुई है । यह प्रतीत किया गया है कि १९५३–५४ के आंकड़ों की तुलना में १९६०–६१ तक प्लीहा, परजीवी और शिशु परजीवी सूचकों में क्रमशः कुल ९६.३, ९९.८ और ९२.५ प्रतिशत कमी हुई है ।

(ख) यह ज्ञात किया जा सकता है कि देश में मोतों के पंजीयन की वर्तमान प्रणाली के अनुसार मरण सम्बन्धी विश्वस्त आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं । अस्पतालों तथा औषधालयों में सिर्फ मलेरिया निदान किये गये रोगियों के अस्वस्थता-आंकड़े ही उपलब्ध हैं । ये आंकड़े भी हर वर्ष के राज्य भर के उपलब्ध नहीं हैं । इसके अतिरिक्त ऐसे आंकड़े देने वाले औषधालयों की संख्या भी हर वर्ष अलग-अलग होती है । इन कमियों के कारण मलेरिया अस्वस्थता में कमी भिन्न भिन्न वर्षों के अनुपाती मलेरिया मामलों (सब प्रकार के रोगियों की कुल संख्या से मलेरिया के रोगियों का प्रतिशत) की तुलना द्वारा ही प्राप्त करनी पड़ती है ।

गत पांच वर्षों में इलाज किये गये सभी प्रकार के रोगों के रोगियों एवं क्लिनिकल मलेरिया के रोगियों की कुल संख्या इस प्रकार है :—

वर्ष	सब रोग	क्लिनिकल मलेरिया के रोगी	अनुपाती रोगी दर प्रतिशत
१९५७–५८ . .	३,५५०,६२२	२५३,४१८	७.१
१९५८–५९ . .	४,९२७,९१४	२६८,८७२	५.५
१९५९–६० . .	८,७९४,२९४	२८७,०३५	३.३
१९६०–६१ . .	१०,१२८,८११	१९२,०७६	१.९
१९६१–६२ . .	१२,८६०,८६९	११३,४८९	०.९

(ग) राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम उत्तर प्रदेश में तृतीय पंचवर्षीय योजना अवधि के अन्त तक जारी रहेगा ।

(घ) आशा है कि वर्तमान प्रगति के साथ तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक मलेरिया का उन्मूलन हो जायेगा । तब इस कार्यक्रम का, नेपाल जैसे अन्य देशों की सीमा के पास स्थित एककों के अलावा राज्य के प्रमुख भाग में प्रवन्धात्मक पहलू प्रारम्भ होगा ।

Dam at Mainadhar on Barak River, Assam

1117. Shri N. R. Laskar: Will the Minister of **Irrigation and Power** be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 196 on the 7th August, 1962 and state:

(a) who are the investigating authority and the name of the experts engaged in the investigation of earthen dam at Barak river at Mainadhar, Assam;

(b) the year in which the investigation was actually started; and

(c) the probable date by which Government is expecting to complete the investigation?

The Minister of State in the Ministry of Irrigation and Power (Shri Alagesan): (a) The investigations are being carried out by the Central Water & Power Commission.

(b) and (c). The preliminary investigations to explore the possible dam sites on the Barak river in Assam were carried out by the Central Water & Power Commission as far back as 1954, but none of the sites investigated for a dam was considered suitable, except the one at Mainadhar, which held some promise. Some foundation explorations were also carried out at this site. After examining the cores obtained from this site, the Geologist gave the opinion that the site was quite unsuitable for any masonry or concrete dam. Further investigation work was stopped at the end of January, 1957.

In a meeting of the State Flood Control Board held on 20-2-58, the Agriculture Minister, Assam suggested reconsideration of a storage project on the river Barak. A Member of the Central Water and Power Commission and the Chief Engineer, (Floods), Central Water and Power Commission and the Chief Engineer, Irrigation and Flood Control, Assam alongwith the Geologist inspected the Mainadhar dam site on the 18th of January, 1960. As a result of this joint inspection, it was considered that an earth dam of a moderate height of 200 to 250 ft., solely for flood control, might be practicable at the site and that further investigations might be carried out to establish the suitability of the site for the proposed earth dam. At the request of the Government of Assam, the Central Water and Power Commission have taken up the necessary investigations of the site. The work was started on 1-4-60 and most of the investigation work has been done. The remaining drilling work is expected to be completed by 31-3-1963.

Power Stations in Bilonia, Sunamera and Kamalpur

1118. Shri Biren Dutta: Will the Minister of **Irrigation and Power** be pleased to state:

(a) whether power stations are proposed to be built in Bilonia, Sunamera and Kamalpur; and

(b) if so, when these are expected to be started?

The Minister of State in the Ministry of Irrigation and Power (Shri Alagesan): (a) and (b). These places are proposed to be electrified by extending supply from the neighbouring generating stations. Construction of the necessary transmission lines and sub-stations is likely to be started during the current financial year.